# अनुक्रमणिका


| अध्याय | पृष्ठ संख्या |
|---|---|
| **अध्याय 1. भारत के प्रमुख लोक नाट्य के प्रकार**<br>• लोक साहित्य का परिचय<br>• 'लोक' शब्द की व्युत्पत्ति<br>• "लोक" शब्द की परिभाषा<br>• साहित्य<br>• लोक साहित्य<br>• लोक साहित्य की परिभाषा और स्वरूप<br>• लोक साहित्य और शिष्ट साहित्य में अंतर<br>• लोक साहित्य और साहित्य का परस्पर संबंध तथा तुलनात्मक अध्ययन<br>**भारत में लोक साहित्य की परंपरा**<br>➢ लोक-संस्कृति तथा लोक साहित्य की पृथक सत्ता :<br>➢ लोक साहित्य का समान्य परिचय<br>➢ भारतीय लोकसाहित्य का सामान्य परिचय<br>➢ भारत के प्रमुख लोक नाट्य निम्नलिखित है।<br>➢ लोक नाट्य | 1-17 |
| **निष्कर्ष**<br>**संदर्भ** | 17-34 |
| **अध्याय 2: गुजरात के प्रमुख लोक साहित्य का प्रकार**<br>❖ **गुजरात के लोक साहित्य का समान्य परिचय**<br>❖ गुजरात के लोक साहित्य के प्रकार<br>▪ लोक गीत<br>▪ लोक नाट्य आख्यान<br>▪ लोक नाट्य<br>▪ लोक नृत्यों | |




Scanned with OKEN Scanner

| | |
|---|---|
| ▪ लोक कथा | 35 |
| ▪ लोक कला | 36-38 |
| ▪ लोक सुभाषित | |
| **निष्कर्ष** | |
| **संदर्भ** | |
| **अध्याय 3. भवाई लोक नाट्य का सामान्य परिचय** | 39-127 |
| ⇒भवाई का अर्थ | |
| ⇒भवाई के उदद्भव की कथा | |
| ⇒त्रागाड़ा भवैया की जात | |
| ⇒भवाई संग्रह की आवृति | |
| ⇒लोक नाट्य भवाई वेशों एवं प्रकार | |
| **भवाई के वेषों के वर्गिकरण** | |
| ❖ पारंपरिक भवाई | |
| ❖ आधुनिक भवाई | |
| **भवाई नाट्य अन्य प्रदेश के नाट्य से साम्यता** | |
| **भवाई के वाद्य** | |
| **निष्कर्ष** | |
| **संदर्भ** | |
| **अध्याय 4 : भवाई लोक नाट्य का सामाजिक अध्ययन** | |
| ➢ पूर्वभूमिका | |
| ➢ भवाई में पारंपरिक सामाजिक वेश | |
| **निष्कर्ष** | 128 |
| **संदर्भ** | 129-133 |
| **अध्याय 5 : भवाई लोकनाट्य का सांस्कृतिक अध्ययन** | |
| ❖ लोक नाट्य भवाई नृत्य प्रधान | |
| ❖ रंगभूषा | |
| ❖ वेशभूषा | 134-152 |




Scanned with OKEN Scanner

| | |
|---|---|
| ❖ प्रकाश | |
| ❖ भवाई के वाद्य और यंत्र | |
| ❖ भूंगल का शेक | |
| ❖ भृंगळ बजाने के नियम | |
| ❖ मान | |
| ❖ मान देने के नियम | |
| ❖ भवाई के गीत गाने के लिए नहीं, खेलने के लिए होते हैं | |
| ❖ भवाई का संगीत मुक्त है | 152-159 |
| ❖ भवाई में विशेष राग को विशेष ताल में गाने की प्रथा है | |
| ❖ मात्रा का उपयोग कैसे होता है ? | |
| ❖ भवाई का थेई थेई (थेईकारा) | 159-160 |
| ❖ थप्पा | 160-162 |
| ❖ भवाई में प्रयुक्त प्रमुख ताल-बोल इत्यादि | 163 |
| ❖ भवाई का संगीत नृत्त एवं नृत्य प्रधान | 164-166 |
| ❖ भवाई में लोक संगीत तथा देशी संगीत | |
| ❖ स्वयं के ताल | |
| ❖ गरबी विलंबित लय में | 167-176 |
| ❖ नर्तन की पृष्ठभूमि में व्यक्तिगत तथा विस्तृत मानसिक भूमिका | |
| ❖ काकड़ा और नर्तन | |
| ❖ जटिलता का आभास | |
| ❖ विविध प्रकार की नाचणी इत्यादि | |
| ❖ नर्तन की पद-गतियाँ (पैर की चाल ) | 177 |
| ❖ मौलिक मंच परंपराएँ | 178-179 |




Scanned with OKEN Scanner

| | |
|---|---|
| ❖ नट के साथ सामाजिकों की सहानुभूति<br>❖ चित्र फ्रेम स्टेज की अपेक्षा भवाई का स्वरूप किस तरह पृथक होता है ?<br>❖ अभिनय<br>❖ तालीम देने की पद्धति<br>❖ भवाई लोक सांस्कृति से लोक से जुड़ना | 180-213 |
| निष्कर्ष | 214 |
| संदर्भ | 215-217 |
| **अध्याय : 6 भवाई कलाकारो से साक्षात्कार करना**<br>➢ भवाई कलाकार की तस्वीर<br>➢ सी.डी. मे भवाई कलाकार के वीडियो एवं ऑडियो | 218 |
| उपसंहार | 219-221 |
| परिशिष्ठ | 222-226 |




Scanned with OKEN Scanner